

किसान छात्रावास बावड़ी, जोधपुर

1. छात्रावास का नाम व पता — किसान छात्रावास बावड़ी

2. इतिहास — जोधपुर से 45 किलोमीटर नागौर रोड़ पर स्थित बावड़ी गाँव अब तहसील के साथ उपखण्ड अधिकारी का मु'यालय है। इस क्षेत्र में आस-पास के गाँवों के लिए विज्ञान सहित सभी विषयों के लिए यहाँ पर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पहले से ही है। इसलिए दूरदराज गाँवों के छात्र यहाँ अध्ययन हेतु आते हैं। ग'ामीण छात्रों की आवासीय आवश्यकता के समाधान हेतु समाज सेवी शिक्षा प्रसार के लिए समर्पित स्व. लादूराम ग्वाला ने बावड़ी में किसान छात्रावास स्थापना की कार्य योजना बनाई। इन्होंने सबसे पहले जाट समाज के प्रबुद्धजनों के साथ मिलकर 14 अगस्त 1997 को किसान छात्रावास संस्थान, बावड़ी का पंजीयन (112/जोधपुर/1997-98) करवाया। उस समय वे ग'ाम पंचायत बावड़ी के सरपंच थे, इसलिए छात्रावास हेतु भूमि आवंटन का प्रस्ताव पारित करवा कर छात्रावास निर्माण को आगे बढ़ाने की मुहिम शुरू की लेकिन कई अड़चनों के चलते राज्य सरकार से भूमि आवंटन छः वर्ष तक नहीं हो पाया। आखिरकार किसान नेता तथा तत्कालीन विधानसभा अध्यक्ष परसराम मदेरणा के निर्देशों से राजस्व विभाग, राजस्थान सरकार ने 21 जनवरी 2003 के आदेशानुसार राजस्थान भू राजस्व अधिनियम, 1963 तथा अधिनियम 21 जून 2001 के अन्तर्गत छात्रावास प्रयोजनार्थ किसान छात्रावास बावड़ी को ओबीसी वर्ग में होने से 4 बीघा गैर मुमकिन आगौर भूमि रूपांतरित कर निःशुल्क संस्थान को आवंटित की गई। यह सफलता लादूराम ग्वाला के अथक प्रयासों ही सम्भव हो सकी। वर्तमान में इस छात्रावास में छात्रों के आवास हेतु 68 कमरे बने हुए हैं जहाँ करीब 200 छात्र रहते हैं। छात्रावास में भोजनशाला सहित सभी सुविधाएँ हैं।

अशिक्षा के कारण जीवन में कितने ही संघर्ष करने पड़ते हैं इस बात से लादूराम ग्वाला भली-भाँति अवगत थे। किसान बोर्डिंग हाउस जोधपुर की भोजनशाला में सेवा कार्य करते हुए इन्होंने अपनी जीवन यात्रा में मास्टर रघुवीर सिंह तथा किसान केसरी बलदेव मिर्धा के साथ लम्बे समय तक कार्य किया। इसके बाद नेतड़ा व बावड़ी ग'ाम पंचायत के लम्बे समय तक सरपंच रहे। इसके साथ ही वे सहकारी सेंट्रल कॉऑपरेटिव बैंक, जोधपुर के दो बार चेयरमैन रहे। वे जीवनपर्यन्त सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन तथा शिक्षा प्रसार के लिए समर्पित कार्य करते रहे। लादूराम ग्वाला का ओसियां जाट छात्रावास के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

डॉ. गंगाराम जाखड़, एच.आर इसराण जोगाराम सारण की पुस्तक
“मारवाड़ जाट समाजिक एवं शैक्षिक जागृति” से साभार